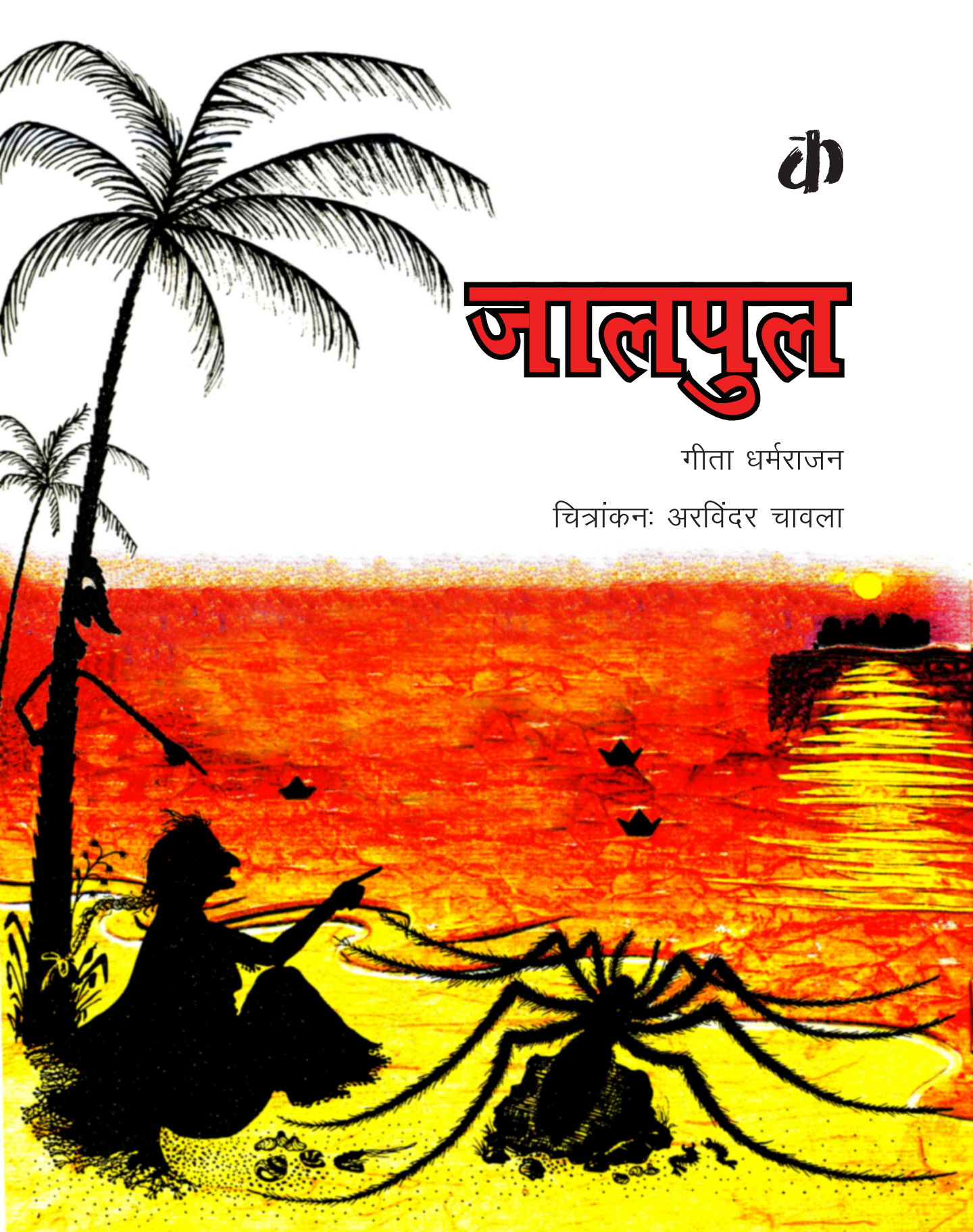

जालपुल

गीता धर्मराजन

चित्रांकन: अरविंदर चावला

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities." — **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]." — **Papertigers**

Copyright © KATHA

जालपुल

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः अरविंदर चावला

KATHA

Copyright © KATHA

कारूपाई नामक एक
जुलाहा औरत थी।

दिन–भर वह अपने करघे पर
बैठकर सुंदर–सुंदर, रंग–बिरंगी
साड़ियाँ बुनती थी।

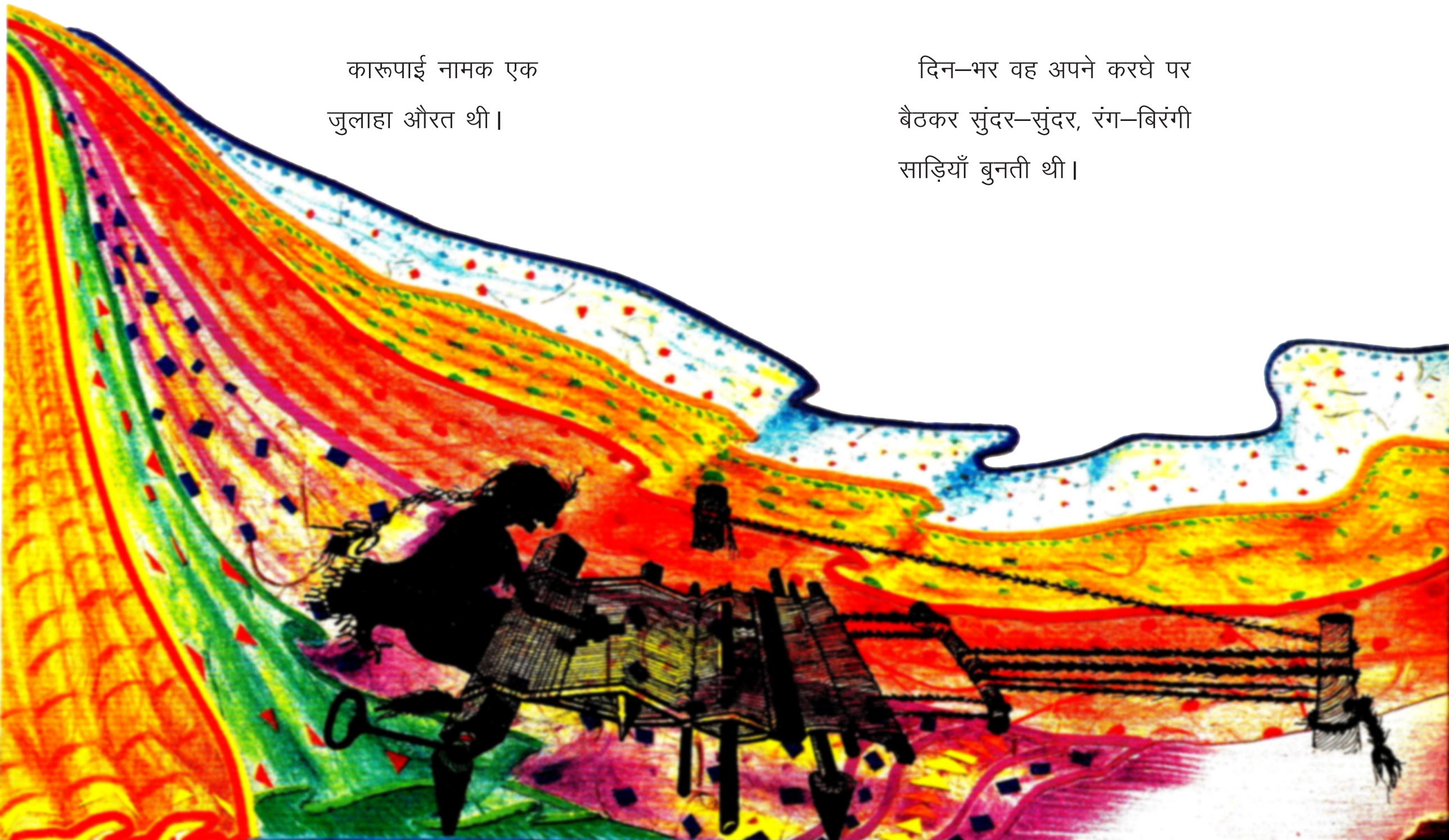

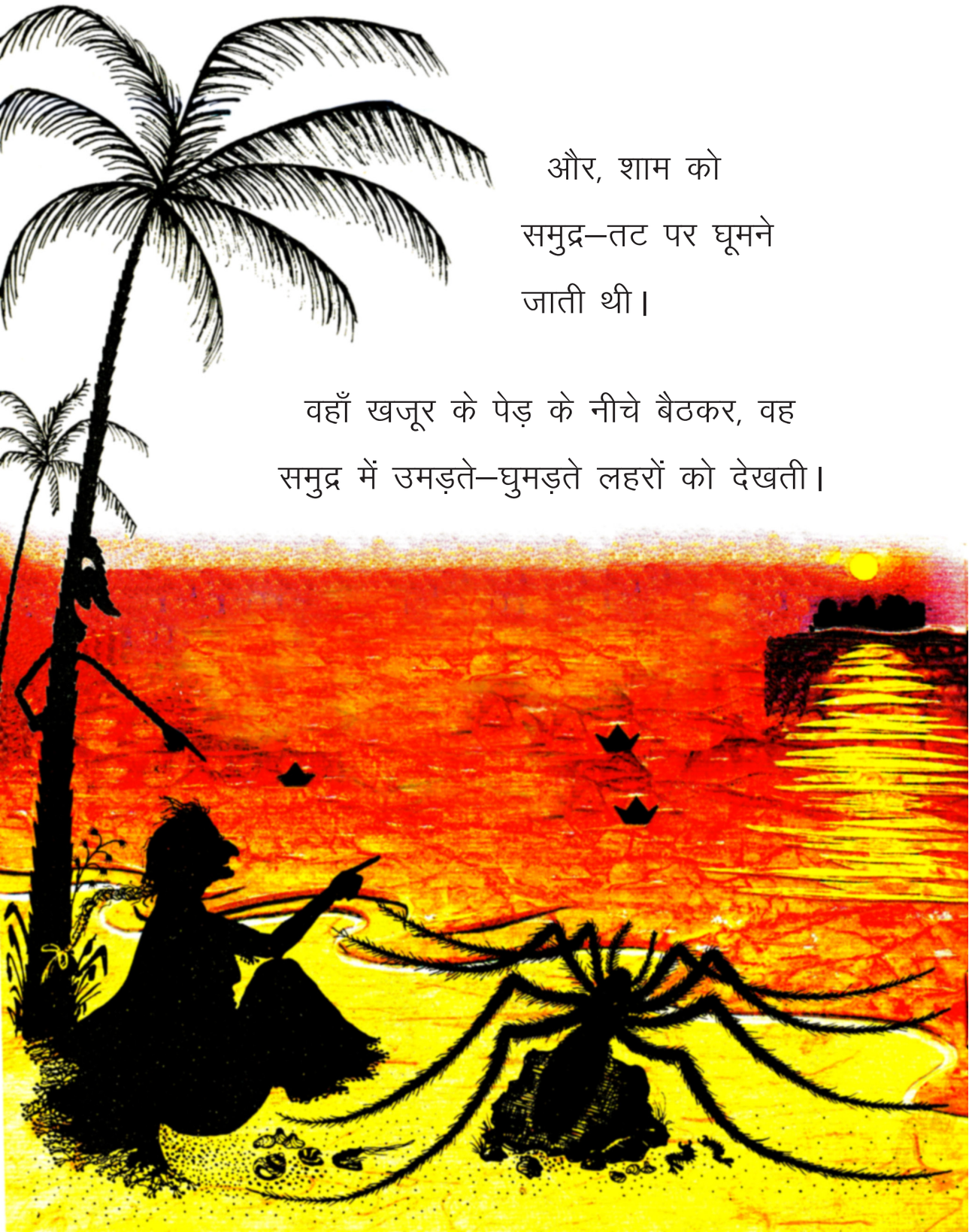

और, शाम को
समुद्र–तट पर घूमने
जाती थी।

वहाँ खजूर के पेड़ के नीचे बैठकर, वह
समुद्र में उमड़ते–घुमड़ते लहरों को देखती।

और अक्सर समुद्र पर एक पुल बुनने का सपना देखती।

एक दिन, उसे एक बड़ी–सी मकड़ी मिली। ''मैं तुम्हारे सपने के बारे में जानती हूँ'',। सच पूछो तो मैं भी वही चाहती हूँ मकड़ी बोली।

''ओह! तभी तुम दोनों यहाँ रोज़ आती हो। पर तुम्हारा सपना, बावला है बावला! चले हैं समुद्र पर पुल बनाने!'' खजूर बोला। पर दोनों ने खजूर की बात अनसुनी कर दी। और रेत पर बैठकर योजना बनाने लगे – कितना लंबा? कितना मजबूत? किस–किस चीज़ की ज़रूरत पड़ेगी, आदि।

फिर पुल का काम शुरू हुआ।

''बहुत मुश्किल है!'' मकड़ी बोली।

Copyright © KATHA

''मुझे नही लगता कि तुम से कुछ होगा,'' खजूर बोला।

''पर अच्छी बातों का अंजाम तो तुम जानते ही हो।'' देखते ही देखते बहुत से लोग कारूपाई और मकड़ी की मदद में जुट गये। और पुल बन कर तैयार हो गया। लंबा, मजबूत, धूप में चमकता हुआ।

''सूंदर, अति सुंदर,'' सबने कहा। ''पर, फायदा क्या है इस पुल का?'' कारूपाई अपनी झोंपड़ी में अकेली बैठकर, जालपुल का किस तरह उपयोग हो सकता है, यह सोचने लगी।

पर जब कुछ नही सूझा, तो उसने अपनी मकड़ी सखी को अपना दुख बताया। अब दोनों साथ–साथ, एक दूसरे का सिर खुजलाते हुए उपाय सोचने लगे।

Copyright © KATHA

तब एक दिन खजूर ने सांत्वना दी, ''दूर उस किनारे पर सारे लोग बहुत खुश हैं। तुमने सपने से पुल बुना है और अब लोग, पुल से सपने बुनेंगे। इस से अधिक उपयोग और क्या हो सकता है।''

"हाँ, सच! अपने पूरे हुए सपने को देखने का यही तो सही ढंग है," कारूपाई और मकड़ी एक साथ बोले।

और अब झूलते हुए, सुंदर जालपुल को देखने के लिए दुनिया के कोने–कोने से, पास–पास से, दूर–दूर से लोग आते हैं।

xhrk /kejktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया* विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

vjfoUnj pkoyk एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं। इन्होंने 1993–1998 तक 'कथा' के साथ काम किया है। इन्होंने *'चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट', 'नेशनल बुक ट्रस्ट'*, इत्यादि के साथ भी काम किया है। यह मास्टर ऑफ फाईन आर्टस हैं। साथ ही यू. जी. सी. नेट विसयूअल आर्टस भी पास किया है। यह कला के क्षेत्र में भी बच्चों के साथ अच्छा काम कर रही हैं।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

समुद्र तट पर बैठी कारूपाई, पुल बनाने का सपना देखा करती थी। एक मकड़ी कारूपाई के अनोखे सपने को जान गई और उसने की उसकी मदद। क्या दोनो मिलकर एक पुल बना पाएंगे? आईये पढ़िए और जानिए कैसे बना एक सुन्दर जालपुल!